बर्लिन कांग्रेस

बर्लिन कांग्रेस (13 June - 13 July 1878)

बर्लिन में सम्पन्न एक सम्मेलन था जिसमें उस समय की महाशक्तियाँ (रूस, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, आस्ट्रिया-हंगरी, इटली तथा जर्मनी), चार बाल्कन राज्य (ग्रीस, सर्बिया, रोमानिया, मान्टीनिग्रो) और उस्मानी साम्राज्य ने भाग लिया था।

इसका उद्देश्य 1877-78 के रूस-तुर्की युद्ध के बाद बाल्कन प्रायद्वीप के राज्यों की सीमाएं तय करना था। इस सम्मेलन के परिणाम स्वरूप बर्लिन की संधि पर हस्ताक्षर हुए। इसने तीन माह पूर्व हुए रूस और तुर्की साम्राज्य के बीच हुए सैन स्टीफनो की संधि का स्थान ग्रहण किया।

इस समय यूरोपीय रंगमंच पर संयुक्त जर्मनी का आविर्भाव हो चुका था। जर्मनी के चांसलर बिस्मार्क के प्रस्ताव पर सम्मेलन बर्लिन में हुआ। चांसलर बिस्मार्क ने ईमानदार दलाल के रूप में सभापतित्व किया, परंतु सम्मेलन में ब्रिटिश प्रधानमंत्री डिसरायली छाए रहे।

बर्लिन के संधि पर 13 जुलाई 1878 ई० को हस्ताक्षर हुए। बर्लिन की संधि के अनुसार

पूर्वी समस्या के संबंध में निम्नलिखित व्यवस्थाएं की गई -

- वृहद् बुल्गेरिया को तीन भागों में विभाजित कर दिया गया। प्रथम बुल्गेरिया के राज्य को तुर्की की अधीनता के अंतर्गत स्वतंत्र राज्य मान लिया गया। इस प्रकार बुल्गेरिया का क्षेत्र सैन स्टीफेनो की संधि द्वारा निर्धारित क्षेत्र का लगभग एक तिहाई रह गया।

- वृहद् बुल्गेरिया का दक्षिणी भाग अर्थात पूर्वी रुमेलिया, सैन स्टीफेनो की संधि के अनुसार बुल्गेरिया के अन्तर्गत था, किंतु बर्लिन की संधि द्वारा पूर्वी रुमेलिया को बुल्गेरिया से अलग कर पुनः तुर्की के अधीन कर दिया गया। किंतु इसके लिए तुर्की को यूरोपीय राज्यों द्वारा स्वीकृत ईसाई गवर्नर नियुक्त करने का वचन देना पड़ा।

- यद्यपि बोस्निया और हर्जेगोविना पर तुर्की का प्रभुत्व रहा, किंतु उनका प्रशासकीय नियंत्रण अनिश्चित काल के लिए आस्ट्रिया को सौंप दिया गया। आस्ट्रिया को सर्बिया तथा मान्टीनीग्रो के बीच स्थित नोवी बाजार के संजक में अपनी सेना रखने का अधिकार प्राप्त हो गया।

- सर्बिया और मान्टीनिग्रो को पूर्णतया स्वाधीन राज्यों के रूप में स्वीकृत कर लिया गया।
- रुमानिया को भी स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली गई, किन्तु उसे बेसेरेबिया का प्रदेश रूस को देना पड़ा, उसके बदले में उसे दोब्रुजा का क्षेत्र, जो सेन स्टीफेनो की संधि द्वारा रूस को दिया गया था, प्राप्त हुआ।
- अर्दहान, कार्स तथा बातुम पर रूस का अधिकार मान लिया गया, किन्तु उसे बयाजिद तुर्की को वापस देना पड़ा। रुमानिया को दोब्रुजा देने के बदले रूस को बेसरेबिया प्राप्त हुआ।
- इंग्लैण्ड को साइप्रस पर अधिकार करने तथा उसका प्रशासन चलाने का अधिकार दे दिया गया। साइप्रस प्राप्त हो जाने से इंग्लैण्ड, रूस की गतिविधियों एवं स्वेज पर निगरानी रख सकता था।
- तुर्की को अल्बेनिया तथा मेसीडोनिया का क्षेत्र पुनः प्राप्त हो गए। कुल मिलाकर 30 हजार वर्गमील का क्षेत्र तुर्की को वापस मिल गया, किन्तु तुर्की सुल्तान को अपनी

ईसाई प्रजा की दशा सुधारने का वचन देना पड़ा।

- बर्लिन कांग्रेस में फ्रांस ने ट्यूनिस, इटली ने अल्बानिया व त्रीपोली तथा यूनान ने क्रीट, एपीरस, थेसेली एवं मेसीडोनिया पर दावा किया, किंतु कांग्रेस ने उनकी मांगों को अस्वीकार कर दिया। कांग्रेस में सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि जर्मनी ने किसी प्रदेश पर दावा नहीं किया। इसके बदले उसे तुर्की की कृतज्ञतापूर्ण मैत्री का लाभ हुआ।

बर्लिन कांग्रेस सम्मेलन के निर्णयों का परिणाम

- बर्लिन कांग्रेस के निर्णयों से बाल्कन क्षेत्र में रूस के प्रभाव को समाप्त कर दिया गया। तुर्की साम्राज्य को ~~एक स्वतंत्र एवं शक्तिशाली सत्ता~~ जो सेन स्टीफनो की संधि द्वारा मृतप्राय हो चुका था नवजीवन प्रदान किया गया।

- कुछ आलोचकों ने इंग्लैंड पर आरोप लगाया है कि उसने बाल्कन क्षेत्र के ईसाईयों को जिन्हें रूस ने सेन स्टीफनो की संधि द्वारा मुक्त किया था, पुनः तुर्की साम्राज्य की दासता में धकेल दिया गया। ब्रिटेन ने

रूस की प्रगति को रोक दिया किंतु आस्ट्रिया को बोस्निया व हर्जेगोविना के क्षेत्र जिनपर सर्विया अपना अधिकार समझता था, उनपर अधिकार प्रदान कर दिया जिससे एक नवीन समस्या उत्पन्न हो गई। स्लाव समस्या के कारण इस क्षेत्र में अशांति उत्पन्न हो गई, जो आस्ट्रिया पतन के बाद ही संभव हो सकी। बर्लिन कांग्रेस के निर्णयों ने बाल्कन क्षेत्र में अनेक स्वतंत्र राज्यों की स्थापना करके तथा स्वयं उसके कुछ भूभागों पर अधिकार करके तुर्की साम्राज्य के विघटन पर अपनी मुहर लगा दी

बर्लिन कांग्रेस में रूस को महान अपमानजनक कूटनीतिक पराजय का मुँह देखना पड़ा। एक तरफ यदि रूस की पराजय हुई तो दूसरी और आस्ट्रिया को भी पूर्ण सफलता नहीं मिल सकी। पूर्वी समस्या में अधिकाधिक उलझने बढ़ती गई।

बाल्कन राज्य की समस्या का समाधान भी बर्लिन संधि द्वारा नहीं हो सका। डेविड थामसन ने लिखा है कि बर्लिन कांग्रेस के निर्णयों का विशेष परिणाम यह निकला कि प्रत्येक राज्य पहले की अपेक्षा अधिक असंतुष्ट हो गया।

बुल्गेरिया का विभाजन सर्वथा अस्वाभाविक था क्योंकि बुल्गेरिया एवं पूर्वी रूमालिया

के लोग एक ही जाति और एक ही भाषा के बोलने वाले थे। 1885 में बर्लिन संधि के विरुद्ध दोनों राज्यों का एकीकरण हुआ जिससे यूरोप में गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई।

मैसीडोनिया को पुनः टर्की के आधिपत्य में देना भी बड़ी भारी भूल थी। टर्की के अत्याचारों के कारण उन्होंने टर्की के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इसी कारण 1912 का बाल्कन युद्ध हुआ।

बर्लिन कांग्रेस में आस्ट्रिया ब्रिटेन आदि राज्यों ने अपने स्वार्थों को सिद्ध करने के लिए पूर्वी यूरोप का मनमाने ढंग से विभाजन किया जिसका यूरोप के अन्तर्राष्ट्रीय संबंध पर गहरा प्रभाव पड़ा।

राजनीतिक क्षेत्र में बर्लिन कांग्रेस का विशेष परिणाम यह था कि रूस जर्मनी से विमुख हो गया। बर्लिन कांग्रेस में जर्मनी ने आस्ट्रिया का समर्थन किया जिससे रूस व आस्ट्रिया के संबंध बिगड़ गए। रूस और इंग्लैंड के संबंधों में भी तनाव आ गया। बर्लिन कांग्रेस के बाद बिस्मार्क की नीति के कारण यूरोप में गुटबन्दी आरंभ हो गई जिससे अन्तर्राष्ट्रीय तनाव बढ़ गया। बर्लिन कांग्रेस के निर्णयों में ही भविष्य में होने वाले विश्वयुद्ध के बीज विद्यमान थे।

बर्लिन कांग्रेस की समीक्षा

इस प्रकार यूरोप के विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन द्वारा पूर्वी समस्या का समाधान करने में असफल रहा। यह समस्या पूर्व के समान जटिल बनी रही। वास्तव में इस संधि में ऐसे तत्व निहित हैं जिन्होंने भविष्य के युद्धों के लिए कारण प्रस्तुत किए जो इस प्रकार हैं —

1. बाल्कन राज्यों की राष्ट्रीयता की अवहेलना
2. तुर्क साम्राज्य को पुनः जीवन प्राप्त होना
3. यूरोप के राज्यों को प्रदेश प्राप्त होना
4. बाल्कन में रूसी प्रभाव का अंत कर आस्ट्रियन प्रभाव की स्थापना
5. यूरोप के राज्यों में असंतोष
6. बाल्कन राज्यों का असंतोष
7. जर्मनी और रूस के संबंधों में कटुता।

इस प्रकार यह संधि किसी को भी प्रसन्न करने में सफल नहीं हुई और पूर्वी समस्या यथावत् बनी रही।